



॥ श्री कृष्ण पूजा विधि ॥
श्रीकृष्णार्पणमस्तु

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री कृष्ण पूजा विधि ॥

भगवान श्रीकृष्ण भगवान विष्णु के आठवें अवतार हैं। वे धर्म की स्थापना, भक्तों की रक्षा तथा अधर्म के विनाश के लिए अवतरित हुए। भगवान श्रीकृष्ण की पूजा करने से जीवन में सुख, शांति, समृद्धि, प्रेम, ज्ञान और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होने की मान्यता है। विशेष रूप से जन्माष्टमी, गुरुवार, एकादशी तथा प्रतिदिन प्रातःकाल श्रीकृष्ण की पूजा करना अत्यंत शुभ माना जाता है।

पूजा सामग्री

भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा या चित्र
स्वच्छ आसन
पीला या सफेद वस्त्र
गंगाजल
पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद और शक्कर)
चंदन
अक्षत (चावल)
रोली या कुमकुम
तुलसी दल (भगवान श्रीकृष्ण को अत्यंत प्रिय)
पीले या सुगंधित पुष्प
धूप और दीप
नैवेद्य (माखन, मिश्री, फल, पंचामृत, खीर या अन्य सात्विक मिठाई)
मौसमी फल
आरती की थाली
घंटी

पूजा की तैयारी

प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त या सूर्योदय के बाद स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करें। पूजा स्थान की सफाई करें और भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा या चित्र को स्वच्छ आसन पर स्थापित करें। पूजा स्थल पर दीपक जलाएं और वातावरण को शांत एवं पवित्र रखें।

पूजा की विधि

सबसे पहले भगवान श्रीगणेश का स्मरण करें और पूजा निर्विघ्न संपन्न होने की प्रार्थना करें।

भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान करते हुए उन्हें गंगाजल अर्पित करें। यदि संभव हो तो पंचामृत से अभिषेक करें तथा उसके बाद स्वच्छ जल से स्नान कराएं।

भगवान को पीले या सुंदर वस्त्र अर्पित करें। चंदन का तिलक लगाएं तथा अक्षत और पुष्प अर्पित करें।

भगवान श्रीकृष्ण को तुलसी दल अवश्य अर्पित करें। बिना तुलसी के श्रीकृष्ण की पूजा अधूरी मानी जाती है।

इसके पश्चात धूप और दीप अर्पित करें तथा श्रद्धा के साथ मंत्र जप करें। आप निम्न मंत्र का जप कर सकते हैं—

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

या

॥ ॐ कृष्णाय नमः ॥

कम से कम 11, 21 या 108 बार मंत्र जप करना शुभ माना जाता है।

इसके बाद भगवान को माखन-मिश्री, खीर, फल या अन्य सात्विक नैवेद्य अर्पित करें। कुछ समय तक नैवेद्य भगवान के समक्ष रखें। अब श्रीकृष्ण की आरती करें और घंटी बजाते हुए पूरे परिवार के साथ भगवान का गुणगान करें।

पूजा के अंत में अपनी तथा परिवार की सुख-समृद्धि, स्वास्थ्य, सद्बुद्धि और भक्ति के लिए प्रार्थना करें। अंत में प्रसाद सभी भक्तों में वितरित करें।

पूजा के विशेष नियम

पूजा के समय मन, वचन और कर्म की शुद्धता बनाए रखें।
भगवान श्रीकृष्ण को तुलसी दल अवश्य अर्पित करें।
सात्विक भोजन ग्रहण करें और क्रोध, असत्य तथा नकारात्मक विचारों से दूर रहें।

यदि संभव हो तो श्रीमद्भगवद्गीता का एक अध्याय या कुछ श्लोक पढ़ें।
नियमित रूप से भगवान श्रीकृष्ण के नामों का स्मरण और मंत्र जप करें।

पूजा के लाभ

भगवान श्रीकृष्ण की कृपा प्राप्त होती है।
परिवार में सुख, शांति और प्रेम बढ़ता है।
मानसिक तनाव और भय कम होता है।
जीवन में सकारात्मक ऊर्जा और आत्मविश्वास का विकास होता है।
धर्म, ज्ञान और भक्ति के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है।
आध्यात्मिक उन्नति तथा मन की एकाग्रता में वृद्धि होती है।
जीवन की कठिन परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति प्राप्त होती है।

निष्कर्ष

श्रीकृष्ण पूजा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि प्रेम, भक्ति, करुणा और धर्ममय जीवन का अभ्यास है। श्रद्धा, विश्वास और नियमितता के साथ की गई श्रीकृष्ण पूजा से मन को शांति, जीवन को दिशा और भगवान की कृपा का अनुभव प्राप्त होता है। भगवान श्रीकृष्ण अपने भक्तों की सच्ची भक्ति से शीघ्र प्रसन्न होते हैं और उन पर सदैव अपनी कृपा बनाए रखते हैं।

॥ जय श्री राधे कृष्ण ॥